ISSN : 2581-687X

RNI No.-UPHIN/2017/74904

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका

खंड-2, अंक-4; आषाढ़-भाद्रपद, 2076/जुलाई-सितंबर, 2019

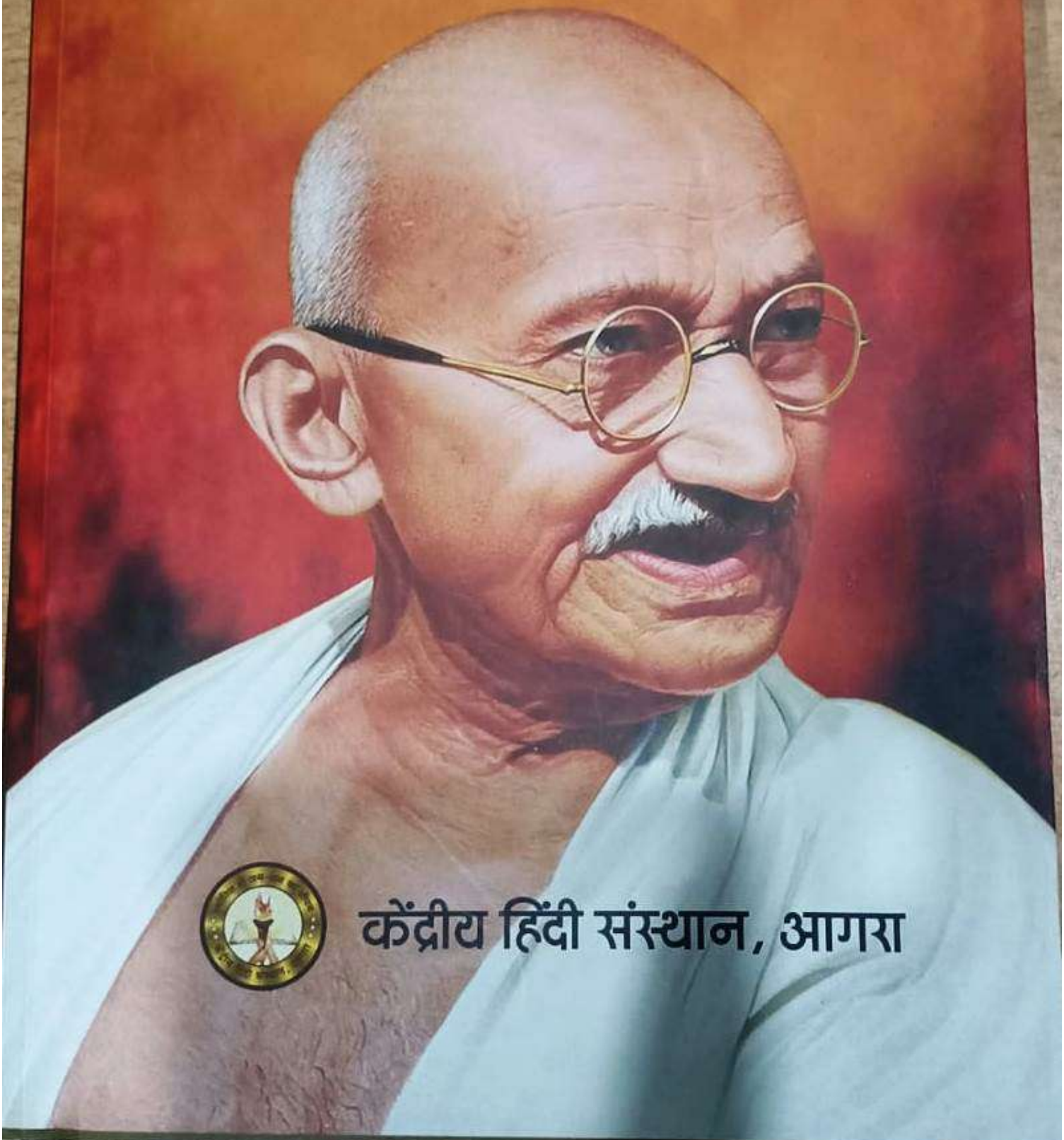

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अनुक्रम

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
•	प्रधान संपादक की कलम से.....	प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय	5–17
1.	शैक्षिक नवाचार के रूप में अभिभावक शिक्षा	इसपाक अली	18–21
2.	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारकी	रमेश प्रसाद पाठक	22–35
3.	आधुनिक शिक्षण प्रणाली में मेधा की आवश्यकता	टी. सुनीता	36–40
4.	व्यावसायिक अभिलाषा का अध्ययन	कोकिला पी. पारेख	41–50
5.	अध्यापक सशक्तीकरण : गुणात्मक वृद्धि	कृष्ण चन्द्र गौड़	51–57
6.	भारत में नवाचार व नवज्ञान सृजन ...	मंजू गुप्ता, दिनेश	58–62
7.	शैक्षिक नवाचार	सुषमा देवी	63–66
8.	विज्ञान शिक्षण : स्थानीय संसाधन एवं चुनौतियाँ	चन्द्रकांत तिवारी	67–74
9.	शिक्षा में शैक्षिक अभिकरणों की भूमिका	सुरेश चन्द्र मीणा	75–82
10.	शिक्षा और राष्ट्रीय एकता	पूजा रानी	83–86
11.	पं. दीन दयाल उपाध्याय का शैक्षिक चिंतन	धीरज सिंह	87–96
12.	भारतीय संस्कृति के अग्रदूत– स्वामी विवेकानंद	हेमलता सुमन	97–116
13.	भारत में समावेशी शिक्षा में चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ	दिनेश कुमार गुप्ता	117–130

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

—रमेश प्रसाद पाठक

भूमिका

भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रदूत, महान शिक्षक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, प्रखरवक्ता, लेखक आदि के साथ कुशल प्रशासक के रूप में बाल गंगाधर तिलक का नाम आदर के साथ लिया जाता है। भारत की आजादी के लिए इन्होंने जो योगदान दिया उसे भुलाया नहीं जा सकता है। भारत के युवाओं के प्रेरणास्रोत के रूप में अपने लेखन कार्य से सभी भारतवासियों को जाग्रत किया तथा स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इनकी लेखनी में सच्ची राष्ट्रीयता, देशप्रेम की झलक मिलती है इसीलिए इनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान समय में भी आवश्यकता है।

किसी भी राष्ट्र में शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण उस राष्ट्र के महापुरुषों, विद्वानों एवं विचारकों द्वारा निर्धारित होता है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को महापुरुषों, विचारकों एवं आचार्यों ने प्रभावित किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के मध्य शिक्षा के क्षेत्र में योगदान करने वाले विचारकों/चिंतकों की शृंखला में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भी अग्रणी श्रेणी में थे। राजनैतिक जागृति तथा सामाजिक एकता के लिए तिलक शिक्षा के प्रसार को आवश्यक मानते थे। उन्होंने लिखा, "सामाजिक दृष्टि से भिन्न-भिन्न आधार वाला यह देश राजनैतिक दृष्टि से भी ऐक्य हो सकता है। इस ऐक्य के लिए शिक्षा आवश्यक है।" तिलक की अवधारणा थी कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ स्थानीय शिक्षा-प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। उनके अनुसार इस कार्य हेतु आत्मबलिदानी युवकों की आवश्यकता है।

शिक्षा तथा दर्शन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। सभी दार्शनिकों ने शिक्षा के संबंध में विचार किया। अपने दार्शनिक विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिए उन्होंने शिक्षा संस्थाओं को जन्म दिया। अपने दार्शनिक विचारों को व्यवहारिक रूप देने के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विश्वभारती तथा योगीराज अरविंद घोष ने पांडिचेरी आश्रम की स्थापना की। चिपलूणकर, तिलक, आगरकर तथा नामजोशी ने मिलकर न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। इसके उपरांत डेक्कन एजुकेशन सोसायटी की नींव डाली।

ा गांधी ने एक नई शिक्षा पद्धति 'बुनियादी शिक्षा' का निर्माण किया। इसका कारण यह रहा है कि एक स्तर के पश्चात दार्शनिक यह अनुभव करने लगते हैं की दार्शनिक विचारधाराओं को व्यावहारिक रूप शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त हो है।

स्तुत अध्ययन अपनी प्रकृति के आधार पर सामाजिक, दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक ाव्य हो कि लोकमान्य तिलक आदर्शवादी होते हुए यथार्थवादी थे। जहाँ तक क दृष्टिकोण का प्रश्न है तिलक की अवधारणा थी कि समाज विकासशील अवयवी के सदृश है तथा प्रगतिशील शिक्षा तथा उसके परिणामस्वरूप बढ़ती हुई जागृति ही सामाजिक परिवर्तन का मुख्य साधन होगी। प्रस्तुत अध्ययन अपनी प्रकृति में दार्शनिक भी है क्योंकि तिलक के अनुसार दर्शन शिक्षा का सैद्धांतिक पक्ष भी दर्शाता है। यह दार्शनिक आधार पर शिक्षा की प्रक्रिया, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, अनुशासन आदि पर प्रकाश डालता है। जैसे-बालक का मानसिक विकास, अधिगम प्रेरणा, इन्द्रियजनित ज्ञान एवं प्रत्यक्षीकरण, संवेदना, सुझाव, रुचि आदि।

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उदय तथा उत्कर्ष में राष्ट्रवादी आधार पर संगठित तथा संचालित शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। चिपलूणकर, आगरकर तथा तिलक महाराष्ट्र के नए शैक्षिक आंदोलन के अग्रदूत थे। लाला लाजपत राय ने डी.ए.वी. कालेज लाहौर की स्थापना की। स्वदेशी आंदोलन तथा उसके उपरांत असहयोग आंदोलन के मध्य अनेक नयी शिक्षा संस्थायें अस्तित्व में आईं। महात्मा गांधी ने अनेक विद्यापीठ स्थापित किए। सन् 1908 में बार्सी नामक स्थान पर राष्ट्रीय शिक्षा पर भाषण देते हुए तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा के चार तत्व बताए हैं-1. धर्म की शिक्षा, 2. मातृभाषा शिक्षा का माध्यम होना, 3. औद्योगिक शिक्षा व 4. राजनीतिक संबंधी शिक्षा। भाषण के अंत में तिलक ने कहा, "वह राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता जिसके मार्ग में बाधाएं न हों। परंतु शिक्षा बाधाओं के बीच में से मार्ग प्रशस्त करने की शक्ति तथा साहस देती है।"

तिलक की शिक्षा संबंधी अवधारणा भारतीय जीवन दर्शन पर आधारित है। उस पर किसी वाद विशेष का प्रभाव नहीं है। तिलक ने शिक्षा को व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक) की प्रक्रिया माना है। शोधकर्त्ता का विश्वास है कि तिलक का शिक्षा दर्शन न केवल राष्ट्रीय वरन् अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रेरणास्रोत है।

अध्ययन में लोकमान्य तिलक पर शोध-कार्यों, निबंधों, लेखों आदि की समीक्षा की गई है। इनमें से कुछ तुलनात्मक अध्ययन हैं तथा कुछ तिलक के राष्ट्रीय शिक्षा एवं राजनीतिक शिक्षा से संबंधित हैं।

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैलमासाङ्कः) 2021

प्रधानसम्पादकः
प्रो.मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

8. वैदिकवाङ्मये चिकित्साविज्ञानम्
9. श्रीमद्भगवद्गीतोक्ताहारवैविध्यसमीक्षणम् — डॉ. खेमराजरेग्मी मानसी — 70-75
10. वैदिकशिक्षादृष्ट्या गृहस्थाश्रमस्योपयोगिता — डा. ऋषिराज: — 76-87
11. मत्स्यपुराणे वास्तुतत्त्वानां वर्णनम् — डॉ. कन्हैयाकुमारझा — 88-93
94-100

हिन्दी विभाग

12. दान एक सामाजिक कृत्य : अग्निपुराण के आलोक में — प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, डॉ. सुचिता यादव — 101-111
13. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षामित्रों में उत्तरदायित्व की भावना का : विश्लेषणात्मक अध्ययन — प्रो. रमेश प्रसाद पाठक, डा. सुजीत कुमार मिश्र — 112-117
14. संस्कृत भाषा-साहित्य का वैश्विक परिदृश्य — डॉ. राजमंगल यादव — 118-127
15. नैषध महाकाव्य में न्याय वैशेषिक दर्शन — श्री मुकेश कुमार — 128-135

English Section

16. Phonetic Introduction to The Nirukta: With Special Reference to Principles of Etymology — Prof. Manoj Kumar Mishra — 136-141
17. Evidence Based Yogic Management of Stress — Dr. Reena Mishra — 142-150

महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर शैक्षिक के चिंतन की प्रासंगिकता

–रमेश प्रसाद पाठक

भूमिका

विश्व के समस्त देशों के विद्वानों, दार्शनिकों एवं शिक्षा मनीषियों ने शिक्षा को मानव निर्माण का प्रबल साधन स्वीकार किया है। शिक्षा एक ओर मानव के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक जैसे महत्वपूर्ण आयामों का सम्यक् विकास कर 'वैयक्तिक विकास' में अपनी भूमिका निभाती है तो दूसरी ओर मानव को सतत् परिवर्तनशील परिस्थितियों के अनुरूप 'सामाजिक विकास' के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान के लिए सक्षम बनाती है।

किसी समाज में शिक्षा सृजन एवं शक्ति का पुंज हैं। यह सामाजीकरण, सामाजिक नियंत्रण, परिवर्तन व्यक्तित्व निर्माण, मानव संसाधन के सृजन का अत्यंत महत्वपूर्ण उपादान है और सामाजिक-आर्थिक विकास का सूचक है। शिक्षा व्यक्ति में आलोचना एवं विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करती है। जीवन के विविध क्षेत्रों में वही व्यक्ति सर्वांगीण विकास कर सकता है, जिसने शिक्षा के द्वारा अंत:दृष्टि एवं आत्म-विश्लेषण करने की क्षमता को विकसित कर लिया हैं वस्तुत: विवेक के आलोक में अपनी शक्ति का सदुपयोग करना ही शिक्षा का परम उद्देश्य है।

शिक्षा-प्रणाली का विकास एवं संचालन अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं वैचारिक परिवेश में होता है। व्यक्ति एवं समाज के आवश्यकताओं, आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था अपना स्वरूप निर्धारित करती हैं समकालीन वैचारिक एवं जीवन-धाराओं से यह दिशा लेती है, साथ ही अतीत की परंपराओं व प्रभावों को ग्रहण भी करती है और उसे समकालीन वातावरण के अनुसार स्वरूप प्रदान करती है। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय, आर्थिक व राजनैतिक संरचनाएं कोई भी विकासशील राष्ट्र अपनी शिक्षा-प्रणाली के आधुनिकीकरण के अभाव में अलग नहीं कर सकता। वस्तुत: शिक्षा सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति का सशक्त माध्यम है। अत: उसके प्रति संवेदनशील होना चाहिए। जीवन में प्रासंगिकता बनाये रखने हेतु अपनी आवश्यकताओं, अपेक्षाओं एवं समकालीन चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में नये उद्देश्य एवं शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करने होंगे। इसके लिए हम वैचारिक

स्रोतों से दृष्टि को ले सकते हैं। विचार में वह शक्ति है जो व्यक्ति एवं समाज को आकर्षित एवं प्रेरित करती है।

आधुनिक भारतीय जन-मानस को महात्मा गांधी एवं गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने जीवन, कार्यक्रम एवं दर्शन से व्यापक रूप से प्रभावित किया है तथा समाज को भविष्य के लिए वैचारिक दृष्टि प्रदान किया है। हर चिंतक का अपना एक जीवन-दर्शन होता है उसकी विचारधारा उसके सिद्धांत सब उसी दर्शन पर आधारित होते है। उसका जीवन-दर्शन उसी दर्शन से ओत-प्रोत होता है। यही दर्शन, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सहायक होता है। और अहम भूमिका निभाता है। महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर की विचारधारा इस परिप्रेक्ष्य में हमें एक दृष्टि प्रदान करती है।

महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर के सभी विचारों का संबंध व्यवहारगत क्रियाओं से जुड़ा था। उनके विचार बौद्धिक आयाम के दृष्टिकोण से प्रस्तुत व विवेचित नहीं थे अपितु उनके हर विचार का आधार व्यक्ति व समाज के स्तर पर व्यवहारगत क्रिया थी। विचारों को क्रिया के स्तर पर संभाव्य बनाने के लिए उन्होंने अपने हर विचार का स्वयं के जीवन में परीक्षण व उपयोग किया। महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर ने तर्क अनुभव व भावात्मक एकतात्मकता के आधार पर स्थितियों को समझाया व उनकी व्याख्या की। महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर में विभिन्न विपरीत आयामों को समन्वित करने की अद्भुत क्षमता थी। उनके विचारो का मंथन सव-अनुभव, स्व-चिंतन, शास्त्रीय ग्रंथों, आधुनिक विचारकों व औरों के अनुभव के आत्मीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित हुआ जो सादगी व अपरिग्रह की जीवन-व्यवस्था, पर-सेवा, देश-प्रेम, मानव-धर्म, सर्व-धर्म, सम-भाव एवं उनके दैनिक क्रिया-कलापों से परिलक्षित होता था। दोनों महापुरूषों की जीवन-शैली उनका दर्शन था। उनकी जीवन यात्रा उनके आदर्शों व विचारों की प्रतीक थी।

महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर शैक्षणिक अर्थों में एक बुद्धिजीवी नहीं थे लेकिन उन्होंने अपनी व्यवहारिक योजनाओं ने अपने दर्शन का निर्माण किया। गांधी एवं टैगोर के दर्शन प्रासंगिक हैं क्योंकि उन्होंने अपने विचारों को संदर्भ व सार्वभौमिकता से जोड़ा। उनके विचार व दर्शन परंपरा, आधुनिकता उत्तर आधुनिकता व भविष्यगतता के दृष्टि से समन्वय का कार्य संपन्न करते हैं।

सम-सामयिक भारतीय समाज में जो मुख्य प्रवृत्तियाँ आज दिखाई दे रही हैं वे नृजातीय भावना का विस्फोट, अपसंस्कृति का फैलाव, महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर की परंपरा के संबंध में व्यापक उदासीनता एवं उनके विचारों को लेकर उपजे भ्रम, पश्चिम की आंधी नकल, और अवसरवादी राजनीति की स्वीकृति परिवार व उससे जुड़े मूल्यों का विघटन, चिंता के मुख्य स्रोत हैं। मूल्यों की (धार्मिक, नैतिक एवं जनतांत्रिक) सामाजिक भूमिका क्षीण हो गयी है। और

RNI No.-UPHIN/2017/74904

ISSN : 2581-687X
पीयर-रिव्यूड रेफर्ड जर्नल

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका

खंड-5, अंक-2; पौष-फाल्गुन , 2078/जनवरी-मार्च, 2022

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अनुक्रम

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
•	आमुख ...	बीना शर्मा	05–06
•	संपादकीय ...	हरि शंकर	07–09
1.	वैश्विक मनोविज्ञान अनुशासन में भारतीय सामग्री की स्वीकार्यता	गिरीश्वर मिश्र	11–32
2.	उच्च शिक्षा में गुणात्मक संवर्धन	इसपाक अली	33–39
3.	शिक्षाशास्त्र, एक विषय तथा अनुशासन	रश्मि श्रीवास्तव	40–53
4.	शिक्षा में गंभीरता का संकट	प्रभात कुमार	54–60
5.	साहित्यिक डायरियों में संस्कार की शिक्षा	राधा दुबे	61–68
6.	वर्तमान समय में गांधी जी और बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता	रमेश तिवारी	69–75
7.	महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक चिंतन की प्रासंगकिता	रमेश प्रसाद पाठक	76–82
8.	भाषा तथा साहित्य शिक्षण में सौंदर्य बोध	दिनेश कुमार गुप्ता	83–94
9.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सूचित पाठ्यक्रम में प्रतिबिंबित महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन	अशोक परमार	95–103
10.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्रौद्योगिकी जगत के लिए महत्व और चुनौतियाँ	मनोज त्रिपाठी, इष्टदेव सांकृत्यायन	104–114
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि से गोंड जनजाति के ज्ञान की उपादेयता	अमित रत्न द्विवेदी	115–120

UGC - CARE Listed
अप्रैल-जून, 2021

शोधप्रभा
वर्ष : 46, द्वितीयोऽङ्कः

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षामित्रों में उत्तरदायित्व की भावना का : विश्लेषणात्मक अध्ययन

- प्रो. रमेश प्रसाद पाठक*
एवं
डा. सुजीत कुमार मिश्र**

भूमिका

अध्यापक राष्ट्र निर्माता है, वह शिक्षा का आधार तय करता है। पूरी शिक्षा की व्यवस्था अध्यापक से ही तय होती है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का महत्त्वपूर्ण घटक है, किसी शैक्षिक प्रणाली की सफलता अध्यापकों की अपने व्यवसाय के प्रति जागरुकता पर निर्भर करती है परन्तु आज अध्यापक अपने इस उद्देश्य से दिन-प्रतिदिन असफल होते जा रहे हैं। यद्यपि वे अपनी इस असफलता के लिए अनेकों कारणों को जिम्मेदार ठहराते हैं परन्तु यह कटु सत्य है कि शिक्षा के स्तर में निरंतर गिरावट के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार स्वयं अध्यापक हैं। संभवतः यही कारण है कि शिक्षा नीति 1968, नई शिक्षा नीति-1986 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में अध्यापकों के उत्तरदायित्व/जवाबदेही पर विचार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में कदम उठाए गए हैं। उनमें से अध्यापकों का उत्तरदायित्व, जवाबदेही एक विचारणीय विषय है। शिक्षा एवं अध्यापक के संदर्भ में उत्तरदायित्व का सम्बन्ध किसी बाह्य अधिकरण से नहीं वरन् नैतिक बाध्यता से है और जवाबदेही, समाजदेही, सामाजिक, प्रशासनिक एवं राजनैतिक नियंत्रण से नियमित प्रत्यय है।

वर्तमान शिक्षण संदर्भ में उत्तरदायित्व/जवाबदेही एक चर्चा का विषय बना है। इसका संबंध या तो विद्यालयों से संबंध प्रबंध व्यवस्था से होता है अथवा उसके विभिन्न अवयवों से, जैसे शिक्षक, कर्मचारी तथा अधिकारी वर्ग का विद्यालय के प्रति

*आचार्य शिक्षाशास्त्र, (शिक्षा संकाय), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली - 110016, E-mail: pathakoham@gmail.com
**डा. सुजीत कुमार मिश्र, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास केंद्रिय विश्व विद्यालय, विलासपुर, (छ.ग.)

जवाबदेही से होता है, इन सब में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। अतः शिक्षक की उत्तरदायित्व की भावना पर ही विचार किया जा रहा है, जो कि आज के बदलते परिवेश में विचारणीय है।

चैलेंज ऑफ एजुकेशन पॉलिसी पर्सपेक्टिव में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एकाउंटेबिल्टी पर कई स्थान पर बल दिया गया। एकाउंटेबिल्टी पर विचार करने से पूर्व उसके अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है।

अंग्रेजी शब्द एकाउंटेबिल्टी के लिए उसके हिंदी रुपांतर उत्तरदायित्व और जवाबदेही दोनों ही विनिमय है। इन दोनों के बीच भेद स्पष्ट नहीं है। उत्तरदायित्व में एक नैतिक जिम्मेदारी का पुट झलकता है जबकि जवाबदेही में किसी बाह्य मध्यस्थ द्वारा के प्रविधान की झलक मिलती है।

हम सभी अवगत हैं कि शिक्षा व्यवस्था की सफलता या असफलता उससे सम्बन्धित आयोजकों शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, बुद्धिजीवियों और शिक्षा में रुचि रखने वाले नागरिकों पर आश्रित रहती है। शिक्षा नीति चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हो लेकिन यदि इस प्रक्रिया में सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने दायित्वों का बोध न होगा तथा उन नीतियों के प्रति कटिबद्धता न होगी तो नीति की सफलता संदेहास्पद होगी।

पारिभाषिक शब्दावली -

1. शिक्षक वर्ग - प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक वर्ग से तात्पर्य प्राथमिक विद्यालयों की कक्षाओं में अध्यापन करने वाले पुरुष एवं महिला शिक्षा मित्रों से ही है।
2. उत्तरदायित्व की भावना - उत्तरदायित्व की भावना से आशय उस परिश्रम से है जो प्राथमिक विद्यालयों की कक्षाओं में अध्यापन करने वाले हर अध्यापक एवं अध्यापकों को याद दिलाता रहे कि शिक्षण व्यवसाय अपनाने के कारण वे सभी परिवार के प्रति, जो अपने बच्चों को स्कूल भेजते हैं, और हर बच्चे के प्रति जिसे अध्यापक की सेवाएं प्राप्त होती हैं - उत्तरदायी है।

अध्ययन के उद्देश्य -

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षामित्रों में उत्तरदायित्व की भावना का उनकी शैक्षिक अनुभव व लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं -

(1) पुरुष शिक्षामित्रों एवं महिला शिक्षामित्रों की उत्तरदायित्व की भावना में कोई

ISSN: 0974-8946

UGC - CARE LISTED

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे प्रथमोऽङ्कः (जनवरी–मार्च) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली–16

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. न्यायस्य न केवलं वेदोपाङ्गत्वम् 1-7
-आचार्य सच्चिदानन्दमिश्रः

2. रावणवधमहाकाव्ये पाणिनिसूत्रक्रमानुसारम् 8-19
अपादानसम्प्रदानकारकयोः पर्य्यालोचनम्
-डॉ. प्रमोदकुमारशर्मा

3. ऋग्वेदे देवैकत्वविमर्शः 20-24
-डॉ. व्रजेन्द्रकुमारसिंहदेवः

4. प्रायणीयेष्टिस्वरूपम् 25-30
-विद्यावाचस्पतिः डॉ० सुन्दरनारायणझाः

5. बौद्धपदार्थविमर्शः 31-36
-डॉ. चक्रपाणिपोखेलः

6. संस्कृतसाहित्ये शिक्षकस्य स्वरूपम् 37-47
-डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः

7. काश्मीरे काव्यशास्त्रीयटीका-परम्परा 48-54
-श्रीरमेशचन्द्रनैलवालः

8. मीमांसाव्याकरणयो एकवाक्यतासिद्धान्तः 55-60
-आर्यो राहुलः

9. पर्यावरणसंरक्षणे वृक्षायुर्वेदस्य योगदानम् 61-68
-डॉ. खेमराजरेग्मी

10. आध्यात्मिक-पर्यावरण व चित्तवृत्ति-निरोध 69-77
-डॉ. हरीश

11. स्वामी श्रद्धानन्द के शैक्षिक विचारों की सम-सामयिक प्रासंगिकता 78-82
-प्रो. रमेशप्रसाद पाठक

स्वामी श्रद्धानन्द के शैक्षिक विचारों की समसामयिक प्रासंगिकता

प्रो. रमेशप्रसाद पाठक*

प्रस्तावना

आर्य समाज के महान् संत स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म 22 फरवरी 1856 ई. में पंजाब प्रान्त के जालन्धर जनपद के तलबन ग्राम में हुआ था। इनके पिता लाला नानक चन्द ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविन्स में पुलिस अधिकारी थे। श्रद्धानन्द जी के बचपन का नाम 'बृहस्पति' था बाद में इन्हें 'मुंशीराम' नाम से पुकारा जाने लगा। जो बाद में एक सफल वकील बने। इनका विवाह शिवा देवी के साथ हुआ। सन् 1917 में इन्होंने संन्यास धारण कर लिया और स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए और दयानन्द सरस्वती के मार्ग पर चल पड़े और उनके कार्यों को पूरा करने का प्रण लिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के महाप्रयाण के बाद इन्होंने स्वदेश, स्व-संस्कृति, स्व-समाज, स्वभाषा, स्वशिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी प्रचार, वेदोत्थान, पाखंड-खण्डन, अन्धविश्वास उन्मूलन और धर्मोत्थान के कार्यों को आगे बढ़ाने के कार्य किये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना

वर्ष 1902 में इन्होंने हरिद्वार के कांगड़ी गाँव में वैदिक धर्म तथा भारतीयता की शिक्षा देने वाले संस्थान 'गुरुकुल' की स्थपना की। वर्तमान समय में यह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय है। श्रद्धानन्द जी सत्य के पालन पर बहुत बल देते थे। उन्होंने लिखा है– "प्यारे भाइयों. आओ, दोनों समय नित्य प्रति संध्या करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करें और उसकी सत्ता से इस योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हों।" मातृभाषा हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने वाले वह प्रथम व्यक्ति थे।

* प्रोफेसर, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016

समाज सुधारक के रूप में

स्वामी जी उन समाज सुधारकों से बिल्कुल अलग थे जिनकी कथनी और करनी में वैषम्य होता है। उन्होंने आर्य समाज के मंच से अपने प्रथम भाषण में ही स्पष्ट कर दिया था, जो वैदिक धर्म के अनुकूल अपने जीवन को नहीं ढाल रहे हैं, उन्हें उपदेशक बनने का कोई अधिकार नहीं है।

इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षामा जभार प्रथमो दिवञ्च।
ते कृत्वा समिधावुपास्ते तयोरार्पिता भुवनानि विश्वा॥

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनने के बाद इन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र का प्रकाशन करना शुरु किया। इस पत्र में एक पन्ना महापुरुषों की जीवनी का था। वीर बालक हकीकत राय, गुरु तेगबहादुर तथा गुरु गोविन्द सिंह आदि महापुरुषों के बच्चों के धर्म के ऊपर शहीद होने जैसी कई देशभक्तों के बलिदान की कहानियाँ इस पत्र में छपती थी। स्वामी जी सभी धर्मों के प्रति सम्मान आस्था रखते थे। स्वामी जी नारी शिक्षा के समर्थक थे उनका कहना था कि–"हिंदू समाज के पतन का एक बड़ा कारण स्त्रियों का पिछड़ापन भी है। जब माताएँ सुयोग्य न होंगी तब तक उनकी संतान का उन्नतिशील और कर्त्तव्यपरायण हो सकना कठिन है।" वह ब्रह्मचर्य अनुशासन को गुरुकुलों में स्थापित करने पर बल देते थे।

शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों के पूर्ण पोषक थे। परम्परागत शिक्षा प्रणाली के पोषक थे वह शिक्षा को ऐसा रूप देना चाहते थे जिससे देशप्रेमी, चरित्रवान् और विद्वान् नवयुवक पैदा हो और संसार पुनः इस देश को अच्छी तरह पहचान सके। इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचलन पर बल दिया। उनका कहना था भारतीय समाज की रक्षा अपनी संस्कृति को अपनाने से ही संभव है। वह वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ भारत की सस्कृति के अनुरूप प्राचीन शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। वह सदैव चरित्रवान् ब्रह्मचारी विद्यार्थी पर बल देते थे। वह विद्यार्थियों के लिए व्यायाम और धार्मिक जीवन को आवश्यक मानते थे। उनका कहना था कि व्यायाम करने वाला स्वस्थ व्यक्ति ही अपने धर्म का पालन करने में सक्षम और समर्थ होता है। हमारे ग्रन्थों में भी कहा गया है–

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

शरीर से तात्पर्य स्वस्थ शरीर से ही है वह किशोरों के लिए व्यायाम अत्यंत आवश्यक मानते थे। क्योंकि ऐसे विद्यार्थी ही अपने धर्म और अपनी नैतिकता में भी विश्वास करेंगे और अन्ततः उसी से उनके चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण होगा। स्वामी श्रद्धानन्द का सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास था। विद्यार्थियों के लिए जीवन के इस सिद्धान्त को अत्यंत आवश्यक मानते थे। वस्तुतः शिक्षा का यही